बी० ए० पार्ट–3 हिन्दी साहित्य (प्रतिष्ठा)

डॉ० आशा कुमारी

अतिथि व्याख्याता

हिन्दी विभाग

मगध महिला कॉलेज, पटना

मोबाइल नम्बर–9304098602,7004661162

Email _ ashakumari2500@Gmail.com.

'गबन' उपन्यास की कथावस्तु

दीनदयाल जमींदार के मुख्तार थे और उनकी गाँव में बहुत धाक थी। वह मध्यमवर्ग परिवार के है, किन्तु उनके यहाँ आर्थिक संकट नहीं था। उनके तीन पुत्र तथा एक पुत्री जालपा उत्पन्न हुई, लेकिन तीनों भाइयों के मर जाने के उपरांत जालपा अपने घर में अकेली रह गई। ऐसी स्थिति में माता–पिता उसकी इच्छाओं को पूर्ण करने में तत्पर रहने लगे। उसके पिता दीनदयाल जब कभी प्रयाग जाते तो जालपा के लिए कोई न कोई आभूषण अवश्य लाते। इस प्रकार, जालपा का आभूषणों से प्रेम बाल्यावस्था से ही हो गया। एक बार बारिश के महीने में झूले पर झूलती हुई गाँव की स्त्रियों और लड़कियों के मध्य एक बिसाती आ पहुँचा। जालपा ने एक चंद्रहार पसंद करके माता से उसे खरीदने के लिए कहा। माता के यह कहने पर कि चार दिन इसका चमक–दमक खत्म हो जाएगा। वहाँ उपस्थित बिसाती ने कहा–चार दिन में तो बिटिया को असली चंद्रहार मिल जाएगा। जालपा के चंद्रहार प्राप्त करने की लालसा उस समय और भी बलबती हो उठती है। जब उसके पिता उसकी माता के लिए चंद्रहार लाते है। जालपा हार लेने की इच्छा व्यक्त करती है, लेकिन माता उससे संकेत में कह देती है कि तेरे लिए चंद्रहार ससुराल से आएगा। यह घटना जालपा के हृदय में चंद्रहार प्राप्त करने की लालसा और तीव्र प्रतीक्षा उत्पन्न कर देती है, समय आने पर जालपा का विवाह दयानाथ के पुत्र रमानाथ से होना तय होता है। दयानाथ ईमानदार और सज्जन पुरूष थे। कचहरी के ऊपर की आमदनी की अनेक सुविधाएँ रहते हुए भी वह अपने पचास रूपये के वेतन से संतुष्ट थे और किसी से रिश्वत लेना बहुत बुरा समझते थे। परिणामतः धन की कमी के कारण रमानाथ को दो महीने के बाद कॉलेज की पढ़ाई छोड़ देनी पड़ी। अपने पुरूषार्थ से पढ़ने की लगन उसमें नहीं थी। वह दो साल से बेकार बैठा था और अपने मित्रों की चीजें माँगकर आनंद करता और शतरंज खेलने में व्यस्त रहता था। दयानाथ अपने इस निकमे बेटे का रिश्ता लेने को विवश कर दिया। दीनदयाल दयानाथ की सज्जनता से बहुत प्रभावित थे। उन्होंने दयानाथ को एक हजार रूपय टीके में दिए। दीनदयाल के टीके को देखकर पचास रूपये में मासिक पाने वाले कचहरी के क्लर्क दयानाथ ने तीन हजार के गहने बनवा लिए।

दयानाथ की आर्थिक स्थिति अच्छी न होने पर भी ये जेवर ऋण लेकर खरीदे गए थे। बारात बड़ी धूमधाम से चढ़ी, फिर भी चंद्रहार न दिया जा सका। जालपा की चिर–संचित चंद्रहार प्राप्त करने

की लालसा पर पानी फिर गया और चंद्रहार के अभाव में जालपा एवं सहेलियों के लिए विवाह का कोई आनंद न रहा। एक सहेली शाहजादी ने जालपा को चन्द्रहार प्राप्त करने के लिए पति के सामने मान करने का गुरू मंत्र सिखाया।

दीनदयाल ने दयानाथ को विवाह में जितना रूपया दिया था। वह सब नाच तमाशे, नेग आदि में खर्च हो गया। अतः धन के अभाव में दयानाथ सर्राफ के रूपये न चुका सकें। इधर चंद्रहार न मिलने के कारण असंतुष्ट जालपा को संतुष्ट करने के लिए रमानाथ अपने धनवान होने की बड़ी–बड़ी डींगें मारने लगा और अपनी हैसियत को बढ़ाकर कहने लगा। तीन महीने बीतने पर एक दिन सर्राफ दयानाथ से अपने रूपये माँगने आया और यह वायदा कराकर ही हटा कि परसों रूपयें की अदायगी हो जाएगी। ऋण को चुकाने के लिए दयानाथ जागेश्वरी और रमानाथ में परामर्श हुआ और दयानाथ ने यह निश्चय किया कि जालपा के कुछ गहने सर्राफ को लौटा दिए जाएँ। परंतु रमानाथ जालपा से गहने माँगने के पक्ष में नहीं था, क्योंकि वह जालपा से पहले ही अपने धनी होने की बात खूब बढ़ा–चढ़ाकर कह चुका था और इस प्रकार गहने माँगने से उसकी पोल खुल जाती है। ऐसी स्थिति में दयानाथ द्वारा छल किए जाने का विरोध करने पर भी रमानाथ जालपा के गहनों की चोरी करने की सोचता है। इसके लिए उसने भाँग व मिठाई मँगवाई ताकि जालपा को रात्रि में नशे में चूर कर सके।

अपनी योजना के अनुसार रमानाथ रात्रि में गहने चुराने का अवसर देखता रहा। जब जालपा प्रेमालाप करके सो गई, तब रमानाथ चुपके से उसके गहनें की संदूकची लेकर दयानाथ के पास जा पहुँचा। इसी बीच जालपा ने अपने गहनों की चोरी का सपना देखा। रमानाथ के पुनः लौटने पर जालपा के सपना की बात कहते ही वह चिल्ला पड़ा–चोर! चोर! और फिर सब चिल्ला उठे। जालपा गहने चोरी हो जाने से बहुत दुःखी हुई। उसे गहनों के अतिरिक्त संसार में अन्य किसी वस्तु से प्रेम न था क्योंकि वह बचपन से ही आभूषण–प्रिय परिवार में पली–बढ़ी थी। वह खोई–सी रहने लगी।

आभूषण चोरी की घटना के बाद रमानाथ नौकरी ढूँढने लगा। उसकी मित्रता रमेश बाबू नाम के एक क्लर्क से थी। जिसके सहयोग से रमानाथ को म्युनिसिपैलिटी में चुंगी की नौकरी मिल गई। उसे तीस रूपया मासिक वेतन मिलता था और इसके अतिरिक्त कुछ ऊपर की आमदनी भी हो जाती थी। पति को नौकरी मिलते ही जालपा का स्वाभिमान जाग उठा और उसे आशा हो गई कि शीघ्र ही उसके नए गहने आ जाएँगें। इसी बीच गहनों की चोरी की घटना सुनकर जालपा की माता ने अपना चंद्रहार उसके पास भेजा, किंतु जालपा के स्वाभिमान ने पति की कमाई में से ही गहने लेने को उचित समझ कर अपनी माता के दिए हार को लौटा दिया।

रमानाथ को अपनी नौकरी की आमदनी देखकर यह विश्वास हो गया कि जालपा के लिए शीघ्र ही गहने बनवा देना। परंतु जब उसे जालपा द्वारा सहेलियों को लिखें गए पत्र से पता चला कि उसकी पत्नी गहनों के लिए बहुत व्याकुल है तो उसने आभूषण उधार लाने का निश्चय किया। इससे पहले भी रमानाथ जालपा के लिए गहने खरीदने की बात की थी, लेकिन रमेश बाबू के उपदेशों से वह खाली हाथ लौट आया था। अंत में रमानाथ ने गहने उधार लाने का निश्चय कर ही लिया। वह गंगू सर्राफ से गहने उधार ले आया। जिन्हें पाकर जालपा की खुशी का ठिकाना न रहा। रमानाथ के गहने की बात सारे सर्राफ में फैल गई और एक दिन एक दलाल चरनदास गहने लेकर रमानाथ के घर जा पहुँचा। जालपा की गलम फहमी के कारण, कि इन गहनों के रूपयें तो माता जी (रमानाथ की माता) देंगी, सात सौ रूपये के दो गहने उधार खरीद लिए गए। इस प्रकार झूठी आन और संकोच के कारण रमानाथ के ऊपर तेरह सौ रूपये से भी अधिक ऋण हो गया।

उधार के बोझ से रमानाथ प्रतिदिन चिंतित और परेशान रहने लगा। जालपा गहने पाते ही समाज में अपनी प्रतिष्ठा बढ़ाने के उद्देश्य से सहेलियों में घूमने लगी और नए लोगों से मेल–जोल बढ़ाना आरंभ कर दिया। सहेलियों के लिए पान, इलायची, जलपान आदि का सारा व्यय जालपा द्वारा किया जाने लगा। रमानाथ जालपा के साथ सिनेमा आदि देखने जाने लगा एक पार्टी में सम्मिलित होने के एक बढ़िया साड़ी और एक घड़ी खरीद ली गई। रमानाथ और जालपा हाईकोर्ट के एक एडवोकेट के यहाँ पार्टी में गये। वहाँ जालपा का परिचय वकील साहब की पत्नी रतन से होता है। रतन को जालपा के कंगन बहुत पसंद आते हैं। वह रमानाथ को वैसा ही कंगन बनवाने के लिए छः सौ रूपये को गंगू सर्राफ की दुकान को कंगन की नई जोड़ी बनाने को कहता है। वह जोड़ी बनाने को तैयार नहीं हुआ। रमानाथ इन सारी बातों को छिपाता रहा। रतन अपने कंगनों के लिए बराबर मांग करती रही, परंतु रमानाथ उनके बनने में देर होने का बहाना करके टालता रहा। अंत में रतन को शँका हो गई और उसने कहा कि यदि कंगन नहीं बनते तो मेरे रूपये लौटा दो। रमानाथ रतन के रूपये चुकाने के लिए मित्रों से रूपये उधार माँगता है, लेकिन रूपये नहीं मिल पाते। रमेश बाबू रमानाथ को समझाते भी है कि मित्रों से रूपये के लेन–देन का व्यवहार मनमुटाव उत्पन्न कर देता है।

रूपये लौटाने के लिए रतन द्वारा दी गई मोहलत का अंतिम दिन भी आ पहुँचा, किंतु रमानाथ छः सौ रूपये एकत्रित न कर सका। उसी समय दफ्तर में चुंगी के हिसाब में आए हुए आठ सौ रूपयों को देखकर उसे इस समस्या के समाधान का एक उपाय सूझा। रूपये खजाँची के पास जमा न करा कर वह देर तक हिसाब करने में लगा रहा और खंजाची के चले जाने के बाद आठ सौ रूपये की थैली घर ले आया। घर आकर उसने थैली जालपा को देते हुए कहा कि आठ सौ रूपये की थैली ज्यों की त्यों रतन को पकड़ा दी। रमानाथ जब घूमकर लौटा तब उसे ज्ञात हुआ कि रतन को आठ सौ रूपये की थैली दे दी गई है। वह उसे वापस लाने के लिए रतन के घर गया, लेकिन संकोचवश नहीं ला सका। अब रमानाथ बड़ी मुश्किल में फँस गया। वह सोचने लगा कि यदि कल रूपया खजाने में जमा न हुआ तो उस पर गबन का मुकदमा चलेगा और उसे गिरफ्तार करके जेल में डाल दिया जाएगा। उसने सवेरे कहार भेजकर रतन से रूपये मँगवाने का प्रयत्न किया, लेकिन रतन के थैली के अधिक रूपये अर्थात् दो सौ रूपये ही भेजे। जालपा को रूपये मँगवाने का पता लग गया। रमानाथ को इतनी जल्दी ही रूपये मँगवाने के लिए कोसते हुए अपने पास दो सौ रूपय होने का संकेत देकर जालपा ने कहा कि मुझसे से लिए होते। इसी बीच चरणदास का नौकर रमानाथ से आभूषण के रूपये माँगने लगा। जिसके कारण पिता जी के सामने ऋण का राज खुल गया। दफ्तर जाते समय रमानाथ को जालपा ने दो सौ रूपये दिए। रमानाथ के पास सौ रूपये अपने थे और दो सौ रतन के यहाँ से मँगवाए थे। इस प्रकार दफ्तर के आठ सौ में से पाँच सौ तो रमानाथ ने इकट्ठे कर लिए, परंतु शेष तीन सौ का प्रबंध न हो सका। रमानाथ दफ्तर पहुँचते ही रमेश बाबू से मिला और उससे जेब से तीन सौ के नोट गायब हेाने की बात कहीं। रमेश बाबू ने कहा कि रूपये कल जमा करा दो वरना हथकड़ियाँ पड़ जाएँगी।

रमानाथ शेष तीन सौ रूपयों के प्रबंध के लिए रतन से मिला पर सफलता न मिली। रतन के घर से निराश लौटते हुए उसने यह संकल्प किया कि सारी स्थिति जालपा को बताकर उससे गहने माँगकर उन्हें गिरवी रखकर रूपए जमा करा देगा। किन्तु घर पहुँचते ही रमानाथ का दृढ़ संकल्प ढीला हो गया। उसने पहले की भाँति रात को गहने चोरी कर लेने की सोची पर उसके लिए उसका साहस न हुआ। प्रातःकाल उठकर वह रमेश बाबू के घर गया पर वहाँ भी उसे सफलता न मिली। मार्ग में उसने निश्चय किया कि जालपा को एक पत्र लिखकर सारी परिस्थिति से परिचित कराएगा और उसके गहनों की माँग करेगा। घर आकर रमानाथ ने लिखा लेकिन देने का साहस न हुआ। उधर जालपा ने कुछ रूपये निकालने के लिए रमानाथ की जेब में हाथ डाला तो वह पत्र उसके हाथ लग गया।

रमानाथ ने पत्र को छीनने की कोशिश पर जालपा जीत न पाया। जालपा के पत्र पढ़ने पर रमानाथ की वास्तविक स्थिति को जान गई। अतः वह तत्काल सीढ़ियों से उतरकर घर से बाहर चला गया और सीधा स्टेशन पर पहुँचकर कलकत्ता जाने वाली गाड़ी में बिना टिकट लिए बैठ गया। इधर जालपा पत्र पढ़कर सब कुछ समझ जाती है और अपने गहने बेचकर म्युनिसिपैलिटी में रूपये जमा करा देती है।

गाड़ी में रमानाथ की भेंट एक बूढ़े देवीदीन से हो जाती है। देवीदीन रमानाथ का रेल–खर्च देकर उसे अपने साथ कोलकाता ले गया। वह नम्र और सहृदय व्यक्ति था। रमानाथ की असहाय अवस्था देखकर उसने उसे अपने यहाँ ठहरा लिया। कोलकाता में उसकी सब्जी की दुकान थी, जिस पर प्रायः उसकी बुढ़िया पत्नी काम करती थी। रमानाथ देवीदीन के घर ही रहने लगा, परंतु पुलिस के डर से वह दिन भर कहीं नहीं निकलता था। संध्या के समय वह एक वाचनालय में जाने लगा। एक दिन उसे अचानक रतन वाचनालय में दिखाई दी, पर वह उससे नहीं मिली। इस प्रकार दो महीने और बीत गए। सर्दी के मौसम में सेठ किरोड़ीमल की ओर से भिखमँगों को कंबल बाँटे जा रहे थे। वहाँ पहुँच कर मुनीम ने आग्रह पर वह भी कंबल ले आया, पर इस कार्य से उसकी जन्म जन्मांतर की संचित मर्यादा आहत हो उठी। उसने यह दृढ़ निश्चय कर लिया कि वह निश्चित रूप से कल काम की खोज में निकलेगा। दूसरे दिन रमानाथ ने गबन का हाल देवीदीन पहले पुलिस से भयभीत हुआ लेकिन यह सोचकर कि 'रूपये में बड़ा जोर है उसने अपने भय पर विजय पा ली।' देवीदीन ने रमानाथ को साथ लेकर घर जाने का विचार किया। रमानाथ पहले तैयार हो गया पर बाद में मना कर दिया। उधर जालपा ने रमानाथ को ढूँढ़ने के लिए शतरंज की एक पहेली छपवाई और उसका हल करने वाले को पचास रूपये इनाम देने की घोषणा की। एक दिन पुस्तकालय से लौटते समय रमानाथ ने कुछ युवकों को इसी शतरंज की पहेली के संबंध में बातचीत करते देखा। उसने उस पहेली की नकल कर ली और उसका हल–निकालकर देवीदीन के हाथ उस अखबार के दफ्तर में भेजा जिसमें वह छपी थी। रमानाथ को उस हल पर पचास रूपये मिला। इन रूपयों से उसने चाय की दुकान खोल ली। पैसा हाथ में हो तो विलास सूझता है। इसी विलास के फेर में रमानाथ को बाहर निकलने को विवश कर दिया। वह प्रारंभ से ही पुलिस के भय से छिप–छिपकर सावधानी और सतर्कता से रहता था, लेकिन एक दिन जब वह ड्रामा देखकर लौट रहा था तो पुलिस वालों ने उसे व्यर्थ ही भय के कारण अपनी नजर से ओझल होते देखा। उसके इस संदेहास्पद आचरण के कारण पुलिस वालों ने उसे गिरफ्तार कर लिया और रमानाथ ने थाने में जाकर स्वयं ही म्युनिसिपैलिटी के रूपये गबन करने की बात कह दी।

पुलिसवालों ने टेलीफोन द्वारा इलाहाबाद पुलिस म्युनिसिपैलिटी से बात की तो उन्हें पता चला कि रमानाथ चुंगी में मुंशी जरूर था, लेकिन उसने गबन नहीं किया। कारण जालपा ने रूपये जमा करा दिए थे। पुलिस वालों ने रमानाथ को यह ज्ञात न होने दिया कि वह निर्दोष है क्योकि पुलिस ने उसे ऐसे समय पर पाया जबकि उसे एक मुकदमें में गवाही देने के लिए पढ़े–लिखें अच्छे से आदमी की आवश्यकता पड़ रही थी। पुलिस वालों ने देशभक्त क्रांतिकारियों पर झूठा मुकदमा बना रखा था। उन्होंने रमानाथ को उसमें वादा–मुआफ गवाह बनकर क्रांतिकारियों के विरूद्ध अपना पढ़ाया हुआ बयान देने को कहा। रमानाथ पहले तो उनकी बात मानने को तैयार नहीं हुआ, लेकिन बाद में जेल जाने के भय से तथा छूटने के मोह से पुलिस वालों की बात मानने को तैयार हो गया। देवीदीन और जग्गो ने रमानाथ को छुड़ाने का प्रयत्न भी किया पर रमानाथ ने स्वयं ही कहा कि उसे जेल न होगी, केवल एक मुकदमें में शहादत देनी होगी। तब देवीदीन और जग्गों वहीं छोड़कर चले गए। रमानाथ ने पुलिस का पढ़ाया हुआ बयान अदालत में दे दिया जिसके आधार पर क्रांतिकारियों को लंबी–लंबी सजाएँ हो गई। रमानाथ के इस व्यवहार से देवीदीन उससे घृणा करने लगा।

रमानाथ की गिरफ्तारी से पहले जालपा ने रतन की सलाह से शतरंज को एक नक्शा समाचार पत्रों में प्रकाशित करके घोषित किया था कि उसे हल करने वाले को पचास रूपये का इनाम दिया जाएगा। रमानाथ ने नक्शा भरकर वह इनाम प्राप्त किया था जिससे घर वालों को मालूम हो गया कि रमानाथ कलकत्ता में है। इसी आधार पर जालपा रमानाथ की खोज में कलकत्ता आई और 'प्रजा–मित्र' समाचार–पत्र, जिसमें शतरंज का नक्शा छपा था, इसके दफ्तर द्वारा रमानाथ का पता लगाकर देवीदीन के घर पहुँच गई। जालपा को यह जानकर बहुत दुःख हुआ कि रमानाथ एक झूठे मुकदमे में पुलिस का मुखबिर बन गया है। वह देवीदीन को साथ लेकर रमानाथ का वह बंग्ला देखने गई जहाँ पुलिस ने उसे ठहराया था। वहाँ पहुँचने पर उसे ज्ञात हुआ कि रमानाथ पंद्रह दिन के लिए वह स्थान देखने गया है जहाँ वरदात हुई थी। रमानाथ को लौटते समय जालपा ने उसे मोटर में बैठे हुए देख लिया। उसने यह निश्चय कर लिया कि या तो रमानाथ से हाईकोर्ट में बयान बदलवा दूँगी। या मैं स्वयं अदालत में जाकर सारी घटनाओं को सच–सच बता दूँगी। जालपा ने उसे सारी स्थिति से परिचित कराकर उसे अपना बयान बदलने को बाध्य किया। रमानाथ पहले तो तैयार नहीं परिचित कराकर उसे अपना बयान बदलने को तैयार हो गया। किंतु पुलिस के अफसरों के धमकाने और उसे बढ़िया नौकरी दिलाने के लालच से जालपा के प्रयत्नों पर पानी फिर गया और यह पुनः क्रांतिकारियों के विरूद्ध गवाही देने को तैयार हो गया।

इसी बीच रतन अपने बूढ़े पति का बीमारी का इलाज कराने के लिए कलकत्ता आई। वकील साहब मृत्यु–शैय्या पर लेटे जान पड़ने लगे पर रतन को आश्वासन दिलाते रहे कि वह ठीक होते जा रहे है।उन्होंने रतन को एक दिन रमानाथ का पता लगाने के लिए भेजा पर पता न लग सका। इसी बीच रतन के वृद्ध पति की मृत्यु हो जाती है।दाह संस्कार के लिए उनके भतीजे मणिभूषण को बुलाया गया। और रतन को लेकर मणिभूषण घर पहुँचा तथा धीरे–धीरे सारा भागडोर अपने हाथ में ले लिया ओर मणिभूषण ने बंगला और मोटर बेच दिया और रतन के लिये पंद्रह रूपय को मकान किराये पर ले दिया। रतन क्रोध के आवेश में बिना कुछ सामान लिए जालपा के घर की ओर चली गई।

रमानाथ ने पुलिस के प्रभाव में आकर क्रांतिकारियों के विरूद्ध गवाही दे दी। जालपा भी रमानाथ का बयान सुनने आई और उसके बयान न बदलने के कारण कोर्ट से लौटते समय रमानाथ को मन ही मन कोसने लगी। मुकदमे का निर्णय हो गया और उसकी गवाही के कारण स्कूल मास्टर दिनेश की फाँसी होगी, और अन्य को कारावास। उसने देवीदीन को दिनेश के घर का पता लगाने को भेजा।

क्रांतिकारियों को सजा हो जाने के बाद रमानाथ के मन में अपने प्रति ग्लानि उत्पन्न हो गई। एक बार वह पुलिस से मिले आभूषणों को लेकर जालपा के पास आया तो जालपा ने उन्हें घृणा से ठुकरा दिया और उसे बुरी तरह फटकाया। रमानाथ देवीदीन के घर से लौट आया और वह इस निष्कर्ष पर पहुँचा कि उसे जज साहब के सामने जाकर सारी पोल खोल देनी चाहिए लेकिन वह जज साहब के बंगले पर पहुँचकर भी लौट आया। वह जज साहब से कुछ कहने का साहस ही न जुटा सका। वस्तुतः रमानाथ पुलिस वालों के व्यवहार से ऊब चुका था और उसने उनके सामने बेढ़ंगा व्यवहार किया। पुलिस वालों को यह समझते देर न लेगी कि रमानाथ का यह परिवर्तित व्यवहार उसकी पत्नी जालपा के कारण है, कुछ मिजाजपुरसी करने की जरूरत होगी' रमानाथ को भयभीत कर दिया। उधर जालपा अपने पति के कार्य के पश्चात्तापस्वरूप दिनेश की बूढ़ी माता की सेवा करने में लग गई।

रमानाथ को काबू में करके पुलिस वाले निश्चिंत हो गए। उनका केस पक्का हो चुका था। फिर भी वह रमानाथ को हाईकोर्ट के फैसले तक छोड़ना नहीं चाहते थे। पुलिस वालों ने रमानाथ को फँसाए रखने के लिए उस पर शराब और सुंदरी का जादू डाला। वेश्या जोहरा को पुलिस वालों ने रमानाथ को चंगुल में फँसाये रखने के लिए रखा। रमानाथ वेश्या जोहरा से प्रेमालाप होने पर धीरे–धीरे जालपा को

भूलने का प्रयत्न करने लगा। एक दिन वह एक पुलिस अफसर के साथ मोटर में घूमने जा रहा था कि मार्ग में पानी ले जाती हुई, दीन–मलीन जालपा को देखा। उसका हृदय जालपा की हालत जानने के लिए तड़प उठा। वह सोचने लगा कि कहीं देवीदीन ने जालपा को निकाल तो नहीं दिया। इस रहस्य का पता लगाने के लिए उसने जोहरा की सहायता ली और जालपा का पता लगाने को कहा। जोहरा भी रमानाथ से प्रेम करने लगी, अतः वह उसकी बात को अस्वीकार न कर सकी। जालपा का पता लगाकर वह आठ दिन बाद लौटी। इस बीच रमानाथ उसकी प्रतीक्षा करते–करते परेशान हो गया। जोहरा ने जालपा से अपने मिलने की घटना सुनाई और बताया कि वह फाँसी लगने वाले दिनेश के घर वालों की सेवा में लगी है। जोहरा स्वयं उसके (जालपा के) त्याग से इतनी प्रभावित हुई कि उसने भी सादा रहन–सहन अपना लिया।

रमानाथ भी जालपा के त्याग की कहानी से बहुत प्रभावित हुआ और दरोगा से एक घंटे की छुट्टी लेकर जालपा, देवीदीन और जग्गो से मिलने गया। उसने जालपा से वादा किया कि वह इस बार निश्चय ही सारे रहस्य का भँडाफोड़ कर देगा। लौटते समय वह जज के बंगले पर पहुँचा। रमानाथ ने इस बार साहस कर जज साहब को सारी सत्य घटनाओं से परिचित करा दिया। इस सत्य के उद्घाटन के अनंतर हाईकोर्ट में फिर मुकदमा सुना गया और रमानाथ के बयान बदलने पर सारे कैदी रिहा कर दिए गए। यह देखकर पुलिस वाले रमानाथ के पीछे पड़ गए। उन्होंने उस झूठी गवाही देने के अपराध में दंडित करने के लिए मुकदमा चलाया। लेकिन रमानाथ ने जज की सहानुभूति प्राप्त कर ली और उसे मुक्त कर दिया गया।

कलकत्ता के षड्यंत्र से मुक्ति प्राप्त करके रमानाथ अपने परिवार और रतन जोहरा व देवीदीन के साथ प्रयाग के एक गाँव में बस गया। ये लोग अपने परिश्रम से खेती करके आजीविका चलाकर परोपकार करने लगे।समय व्यतीत होता गया और एक दिन रतन को इस देह से मुक्ति मिल गई। जोहरा भी कुछ समय उपरांत गंगा में डूबते हुए बच्चे और स्त्री को बचाने के फलस्वरूप गंगा में डूब गई। इस प्रकार रमानाथ बीते दिनों को याद करते हुए अपना जीवनयापन करने लगा।